Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 5, October-2022, ISSN 2230-7540

कक्षा 11 के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन का इनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

ममता शर्मा[1*], डॉ. सविता गुप्ता[2]

[1] शोधार्थी, लाडर्स विश्वविद्यालय, अलवर (राज.)

[2] शोध पर्यवेक्षक, लाडर्स विश्वविद्यालय, अलवर (राज.)

सार-शिक्षा मानव जीवन का श्रंगार है यह मानव विकास का मूल साधन है इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास तथा उसके ज्ञान एवं कला , कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। यह मानव विकास का मूल साधन है उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। एक शिक्षित व्यक्ति अपने परिवार समाज और देश को गौरवान्वित करता है। शिक्षा अंधकार से प्रकाश की ओर मानव यात्रा का नाम है शिक्षा द्वारा मनुष्य के अनंत चक्षु खुलते हैं। उसे आंतरिक व अलौकिक प्रकाश मिलता है अर्थात विद्या के समान कोई नेत्र नहीं है। जिस प्रकार भौतिक वस्तुओं को देखने के लिए आंखों की आवश्यकता होती है उसी प्रकार सभी दृश्य - अदृश्य वस्तुओं तथा घटनाओं को समझने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा बालक की शक्तियों का प्रकटीकरण करती है बालक में विद्यमान प्रकृति प्रदत शक्तियां बीज के रूप में शिक्षा इन बीज रूपी शक्तियों को वृक्ष रूप में विकसित करने का माध्यम है शिक्षार्थी को बाहर से कुछ नहीं प्रदान किया जाता है।

कुंजी शब्द-विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव।

----------X----------

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है मानव द्वारा उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर विकास के मार्ग को प्रशस्त किया जाता है संसाधनों का प्रयोग किस तरह किया जाना है और कौन सा संसाधन किस कार्य के लिए उपयोगी है का ज्ञान शिक्षा द्वारा प्राप्त होता है शिक्षा मानव जीवन का श्रंगार है यह मानव विकास का मूल साधन है इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास तथा उसके ज्ञान एवं कला , कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है यह मानव विकास का मूल साधन है उसे सभ्य , सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है एक शिक्षित व्यक्ति अपने परिवार समाज और देश को गौरवान्वित करता है।

प्राचीन काल से ही शिक्षा का अस्तित्व विद्यमान रहा है और संस्कृति तथा सभ्यता की उन्नति में शिक्षा के योगदान को स्वीकार किया गया है शिक्षक के द्वारा ही मनुष्य के कीर्ति का प्रकाश चारों और फैलता है जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व खिल उठता है शिक्षा बिना मनुष्य का जीवन अधूरा रहता है शिक्षा अंधकार से प्रकाश की ओर मानव यात्रा का नाम है शिक्षा द्वारा मनुष्य के अनंत चक्षु खुलते हैं उसे आंतरिक व अलौकिक प्रकाश मिलता है अर्थात विद्या के समान कोई नेत्र नहीं है जिस प्रकार भौतिक वस्तुओं को देखने के लिए आंखों की आवश्यकता होती है उसी प्रकार सभी दृश्य - अदृश्य वस्तुओं तथा घटनाओं को समझने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है शिक्षा बालक की शक्तियों का प्रकटीकरण करती है बालक में

www.ignited.in

विद्यमान प्रकृति प्रदत शक्तियां बीज के रूप में शिक्षा इन बीज रूपी शक्तियों को वृक्ष रूप में विकसित करने का माध्यम है शिक्षार्थी को बाहर से कुछ नहीं प्रदान किया जाता है बल्कि उसके अंदर की जो शक्तियां होती है और जिन शक्तियों के बारे में अनभिज्ञ होता है उन शक्तियों से परिचित कराते हुए शिक्षा उन्हें विकसित होने के अवसर प्रदान करती है।

स्वामी विवेकानंद शिक्षा मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है व्यक्ति में स्वतंत्र रूप से विचार करने निर्णय लेने तर्क करने की क्षमता का विकास अपने दायित्व को निभाने का एहसास जीवन यापन की कला का विकास शिक्षा से ही संभव है शिक्षा मनुष्य में आत्मविश्वास का संचार करती हैं

यदि शिक्षा के उद्देश्यों के विभिन्न परिदृश्य पर दृष्टि डालें तो शिक्षा संज्ञानात्मक , भावात्मक, मनो-गत्यात्मक उद्देश्यों की पूर्ति करती है जहां तक संज्ञानात्मक उद्देश्य का प्रश्न है उसके अंतर्गत ज्ञान से लेकर मूल्यांकन की क्षमता का विकास शिक्षा के उद्देश्य से सन्निहित होता है क्योंकि शिक्षा समाज का वह बिंदु है जिसके चारों ओर समाज के विकास क्रम का चक्र घूमता है समाज के आर्थिक , राजनीतिक, आध्यात्मिक और मानसिक विकास के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण है शिक्षा के बिना यह सभी अधूरे हैं शिक्षा वह क्रम है जिसके द्वारा समाज में राष्ट्र का विकास संभव है व्यक्ति जन्म से ही एक सामाजिक प्राणी है वह समाज में रहकर ही पद प्रतिष्ठा मान सम्मान प्राप्त कर सकता है जन्म के पश्चात जीवन की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरते हुए उसका सामाजिक विकास होता है जैसे-जैसे बालक का सामाजिक विकास होता है वैसे वैसे उसके सामाजिक बुद्धि का भी विकास होता है ऐसे में मानव के लिए यह आवश्यक है कि वह समाज के लोगों के साथ रहकर किस प्रकार का व्यवहार करें समाज के व्यक्तियों के साथ उसके इस व्यवहार का निर्धारण उसकी सामाजिक बुद्धि द्वारा किया जाता है शिक्षा में सामाजिक बुद्धि एक अनिवार्य तत्व मानी जाती है जिसे हम सामान्य मानसिक क्षमता के संदर्भ में देख सकते हैं सामाजिक बुद्धि समाज में बालकों की व्यवहार कुशलता के साथ ही अच्छे सामाजिक संबंधों की और संकेत करती है जिन व्यक्तियों मै अन्य लोगों के साथ व्यवहार करने की क्षमता और रुची अधिक होती है। सामाजिक उस बुद्धि बालक को जीवन में व्यवहारिक सफलता दिलाने में सहायक होती है ।

सामाजिक बुद्धि:- यह एक सामान्य मानसिक क्षमता है जिससे एक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को समझता है और उनके साथ कुशलता से व्यवहार करता है सामाजिक बुद्धि वाले व्यक्तियों के सामाजिक संबंध अच्छे होते हैं जिनसे उन्हें समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

मनुष्य के सामाजिक प्राणी होने के कारण उसका जीवन समाज में ही संभव है तथा वह समाज में समायोजन करके और सभी से मिल जुलकर व्यवहार करके अपनी सामाजिक बुद्धि का विकास करता है। तथा शिक्षा के अभाव में बालक समाज के नियमों व उत्तरदायित्वि को समझने व उनका पालन करने में असमर्थ होता है। शिक्षा द्वारा ही वह विभिन्न परिस्थितियों में समायोजन कर सामाजिक रूप से परिपक्व होता है। शिक्षा का उद्देश्य बालक का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व बौद्धिक विकास करना है। जब बालक का जन्म होता है, तब वह सर्वप्रथम अपने परिवार के सम्पर्क में आता है और यही से उसकी सामाजिक बुद्धि का विकास होना प्रारंभ होता है।बालक की सामाजिक बुद्धि को वंशानुक्रम , परिवार की स्थिति , वातावरण आदि कारक प्रभावित करते हैं। बालक जिस वातावरण में बड़ा होता है ,वह वातावरण ज्यादातर उसकी सामाजिक बुद्धि को प्रभावित करता है।

समायोजन के क्षेत्र:- समायोजन व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं जीवन का महत्वपूर्ण घटक है, समायोजन को निम्न क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

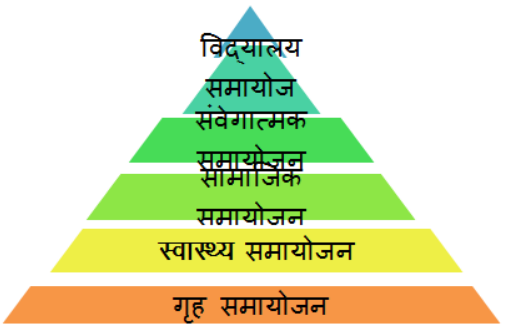

संक्षेप मे कहा जा सकता है कि समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीने की आवश्यकताओं व उनकी पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के बीच शारीरिक व मनोवैज्ञानिक संतुलन एवं समता का स्तर बनाये रखता है समायोजन के सामान्य रूपों को विश्लेषण करने पर पता चलता है कि व्यक्ति कोई आवश्यकता अनुभव करता हैतो उसे एक ऐसे उद्देश्य औरपरिणाम पर ले जाती है जिससे आवश्यकता

पूरी होती है, अपनेव्यवहार व कार्य में उसे कुछ रूकावट व बाधा का सामना करना पड़ता है। जिसके फलस्वरूप वह तनाव अनुभव करता है अपना व्यवहार बदलता है हतीव्र रूकावट से बचने की कोशिश करता है व समाधान ढूँढ निकालता है।

शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ एवं परिभाषा:- शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास किया जाता है जिससे वह अपने पर्यावरण में समायोजन कर अर्थपूर्ण जीवन यापन कर सकें। शिक्षा एक सोद्देश्य प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। विभिन्न स्तरों के विद्यार्थियों के लिए शिक्षण के उद्देश्यों का निर्माण किया जाता है तथा इन्हीं शैक्षिक उद्देश्यों के आधार पर विभिन्न कक्षाओं का पाठ्यक्रम निर्धारित होता है एवं इन शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न शिक्षण अधिगम क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य इन्हीं शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति से है। इन शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति विद्यार्थियों ने किस सीमा तक की है यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि होती है। विद्यार्थी वर्ष भर विभिन्न कक्षाओं में विभिन्न विषयों का अध्ययन करते हैं किंतु सभी विद्यार्थियों की ज्ञानार्जन की शक्ति समान नहीं होती है तथा उनकी शैक्षिक प्रगति में भी अंतर देखने को मिलता है। इसलिए उनकी शैक्षिक उपलब्धि का मापन आवश्यक होता है जिसे शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण द्वारा आंका जाता है। विद्यालय में एक सत्र में पढ़ाए गए पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों द्वारा अर्जित ज्ञान का मूल्यांकन ही उनकी शैक्षिक उपलब्धि है। शैक्षिक उपलब्धि के मापन के लिए विभिन्न प्रकार के परीक्षणों का उपयोग किया जाता है जिसमें अनेक मनोवैज्ञानिक परीक्षण व मानकीकृत परीक्षण भी शामिल है।

शैक्षिक उपलब्धि के उद्देश्य:- शैक्षिक उपलब्धि किसी भी बालक के सीखे गये ज्ञान व अनुभव की मात्रा को प्रकट करती है, इसके उद्देश्य निम्नांकित हैः-

- विद्यालय में विभिन्न कक्षाओं में पढ़ाये जाने वाले विषयों में विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त सफलता एवं योग्यता को ज्ञात करना।
- शिक्षकों के अध्यापन की सफलता का अनुमान लगाना।
- विद्यार्थियों का वर्गीकरण करने में सहायता देना।
- विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर का अनुमान लगाना।
- शिक्षण-विधियों की उपयोगिता और कमियों का ज्ञान प्राप्त करना।
- शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता देना।
- कक्षोन्नति में सहायता देना।
- विद्यार्थियों की वैयक्तिक भिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए योग्यतानुकूल श्रेणी बनाना तथा उनके लिए शिक्षा की व्यवस्था करना।
- शैक्षिक दृष्टि से व्यवस्थापन सम्बन्धी समस्याओं का समाधान करने में सहायता लेना।

शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारक -

पारिवारिक वातावरण- यदि बालक को अपने घर में सकारात्मक वातावरण मिलता है , तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव व नकारात्मक वातावरण मिलने पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने की संभावना रहती है।

सृजनात्मकता- बालक मेसृजनात्मकता जितनी अधिक होती है उसका उतना ही अधिक सकारात्मक पभ्ाव शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

अभिवृति - एक विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि पर उसकी अभिवृति महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है जिसके कारण उसकी शैक्षिक उपलब्धि के परिणामों में ह्रयस व वृद्धि होती है।

बुद्धि - विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यार्थियों की बुद्धि का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है क्योंकि किसी भी

www.ignited.in

उपलब्धि को प्राप्त करने की शैक्षिक क्षमता उच्च बुद्धि वाले में, निम्न बुद्धि वाले बालक से अधिक होती है।

प्रेरणा - बालक को यदि समय-समय पर अध्ययन के लिये प्रेरित किया जाता है और वह मन लगाकर विषय वस्तु का अध्ययन करता है जिससे उच्च शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त करता है।

रूचि - बालक की अपने शैक्षिक विषयों में ज्ञान प्राप्त करने की रूचि उसकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। बालक की रूचि उसकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। बालक की रूचि विभिन्न शैक्षिक विषयों में भिन्न-भिन्न हातेी है

समायोजन - जो विद्यार्थी अपने विद्यालय में जितनी शीघ्रता से अपनी समस्याओं का समायोजन कर समायोजित हो जाता है, उसकी शैक्षिक उपलब्धि उतनी अधिक होती है।

मूल्यअ -विद्यार्थी के सामाजिक व आर्थिक मूल्य उसकी शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देते है ये सभी विद्यार्थिया में समान नहीं होते है , जिनके कारण उनकी शैक्षिक उपलबिध प्रभावित होती है।

नियमितता- बालक जितना अधिक नियमित अध्ययन करता है,उसके ज्ञान व कौशल का उतनी ही अधिक विकास होता है, जिससे उसकी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती है।

स्वास्थ्य- कहा गया है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है इसी कारण स्वस्थ विद्यार्थी अस्वस्थ विद्यार्थी की तुलना में शीघ्रता के साथ उच्च शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त करता है। अतः उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने वाले बालक का शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ होना आवश्यक है।

विद्यालय वातावरण- विद्यालय में शैक्षिक प्रशासन और प्रबन्धन मुख्य तत्व होते हैं। जिसके कारण उसकी शिक्षा व्यवस्था प्रभावित होती है। उसका सीधा संबंध विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ होता है।

माता-पिता का शैक्षिक स्तर- बालक की प्रथम पाठशाला उसका परिवार होता है तथा यदि उसके माता-पिता शिक्षित हाते है तो वे उसे शिक्षा के प्रति अधिक प्रेरित करते है जिसका बालक की शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव पडता है।

आकांक्षा स्तर- आकांक्षा स्तर से तात्पर्य एक ऐसे निष्पादन स्तर से होता है जिसकी उम्मीद व्यक्ति करता है।

एक विद्यार्थी की गति शैक्षिक उपलब्धि उसके आकांक्षा स्तर का निर्धारित करती है यदि विद्यार्थी निर्धारित की गयी शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त कर लेता है तो उसका आकाक्ष स्तर बढ जाता है लेकिन यदि विद्यार्थी निर्धारित शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त नहीं कर पाता है , तो उसका आकांक्षा स्तर कम हो जाता है।

अध्ययन का औचित्य:- शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो विद्यार्थी की व्यक्तिगत विशेषताओं योग्यताओं और बच्चों को ध्यान में रखकर उनका संज्ञानात्मक भावात्मक और मनो गत्यात्मक विकास करती है शिक्षा बालक के विकास और व्यक्तित्व निर्माण का महत्वपूर्ण एवं आवश्यक साधन है शिक्षा को सदैव मानव संस्थाओं के निर्माण व विकास के साधन के रूप में माना जाता है वास्तविक शिक्षा चरित्र का निर्माण करती है और समाज में सृजनशील व्यक्ति के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करने में हमारी सहायता करती है शिक्षा आत्मविश्वास व आत्मविश्वास ही नागरिक बनाने में सहायता प्रदान करती है और शिक्षा संकट के समय परिस्थितियों में सफलता प्राप्त करने की क्षमता बढ़ाती है शिक्षा मानव जीवन के परिष्कार और विकास की प्रणाली है राष्ट्र का विकास शिक्षा पर निर्भर करता है और भारत में शिक्षा को बहुत ऊंचा स्थान दिया गया है।

विद्यालय शिक्षा के तीनों स्तरों में से उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा का विद्यार्थी के जीवन में अपना एक विशिष्ट महत्व है क्योंकि उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी एक संक्रमण की स्थिति में होता है जिससे वह किशोरावस्था से युवावस्था की ओर इस स्तर पर विद्यार्थी में धर्म ,समाज ,राजनीति, देश और कार्य के प्रति रुचि में योग्यताएं प्रदर्शित होने लगती है विद्यार्थी में अमूत चिंतन, तार्किक विश्लेषण , व सिद्धांत निर्माण करने की क्षमता उत्पन्न होती है यह स्तर इसलिए भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है क्योंकि इस स्तर की शिक्षा के बाद विद्यार्थी उच्च शिक्षा में प्रवेश करता है और अपने भविष्य का निर्माण करता है तथा उसमें व्यवसाय चयन की योग्यता उत्पन्न होती है इस स्तर की शिक्षा विद्यार्थी के लिए मार्गदर्शन का कार्य करती है।

विद्यार्थी राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करता है आधार स्तंभ होता है यदि अध्यापक द्वारा विद्यार्थी की भौतिक विभाग को उचित प्रकार से न समझा गया तो अध्यापक

द्वारा की गईशिक्षा से विद्यार्थी की आंतरिक व्यापारिक शक्तियों का पूर्ण रूप विकास कदापि संभव नहीं हो पाएगा इसलिए शिक्षक को छात्र व छात्राओं की व्यक्तिगत भिन्नताओं के अंतर्गत उसके जीवन मूल्य अभिवृत्ति योग्यता क्षमता समाज परिवार के साथ विश्वास तथा समय की कुशलता आदि को समझाएं अत्यंत आवश्यक है जिससे कि वह समय अनुभव विद्यार्थी के व्यक्तित्व को प्रेरक में मौलिक बना सके।

प्रायः यह देखा जाता है प्रत्येक क्षेत्र में सफल होने के लिए युवाओं में आत्मविश्वास लागू होना चाहिए चाहे वह खेल हो शिक्षा हो या अंतर वैदिक संबंध हो निम्न आती है पर्याप्त सामाजिक कौशल से संबंधित है जिन आत्मविश्वास कम होता है उनका सामाजिक विकास उचित प्रकार से नहीं हो पाता है तथा उन्हें असफलता का सामना करना पड़ता है वास्तव में देखा जाए तो बालक का सामाजिक विकास उसकी सामाजिक बुद्धि पर निर्भर करता है क्योंकि सामाजिक बुद्धि बालक को अपने संवेग तथा दूसरों के संडे को समझने में सहायता करती है सामाजिक बुद्धि व्यक्ति के जीवन में सफलता दिलाने में सहायता करती है सामाजिक बुद्धि का अर्थ है दूसरे के व्यवहार को जानना आत्मज्ञान के द्वारा व्यक्ति अपनी योग्यता और क्षमता को पहचान कर सफलता की ओर अग्रसर होता है जो उसके आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक होता है व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है तो व्यक्ति का समायोजन के प्रति दृष्टिकोण व्यापक होता जाता है और प्रत्येक परिस्थिति के साथ समायोजन स्थापित करने लग जाता है जिसका प्रभाव उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है सामाजिक बुद्धि व क्षमता है जिससे हम अपने आप को प्रेरित करके और अपनी भावनाओं को व्यवस्थित करके दूसरे की भावनाओं को भी पहचान सकते हैं सामाजिक बुद्धि से युक्त व्यक्ति दैनिक जीवन में अधिक सफल होता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियो के समायोजन का स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि का स्तर अन्य व्यक्तियों से उच्च होता है।

अगर एक किशोर अच्छा खिलाड़ी या अच्छा विद्यार्थी बनना चाहता है तो उसमें आत्मविश्वास की विशेष योग्यता होनी आवश्यक है आत्मविश्वास ने केवल उसकी सहायता करता है बल्कि उसके भविष्य को भी प्रभावित करने वाला एक बहुत बड़ा कारक होता है यदि किशोर आत्मविश्वास से ओतप्रोत होगा तो यह न केवल उसकी व्यक्तिगत उपलब्धि को लाभ पहुंचाएगा बल्कि देश का भविष्य भी समृत है उस पर हो सकेगा आत्मविश्वास को विद्यार्थियों के अधिगमउपलब्धियों को प्रभावित करने वाले प्रमुख घटक के रूप में देखा जा सकता है और यह आत्मविश्वास व्यक्ति में सामाजिक बुद्धि के द्वारा विकसित हो पाता है अतः कारण चिंता अत्यधिक भारी तनाव असुरक्षा की भावना जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों के कारण विद्यार्थी अपने अध्ययन पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते हैं और कक्षा कक्ष में स्थाई क्या अधिगम प्रभावित होता है।

उच्च माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों की जीवन की दिशा को निर्धारित करने वाला काल है अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का होना अत्यधिक आवश्यक है उच्च माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षा बोर्ड केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड सीबीएसई तथा प्रादेशिक बोर्ड विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर बल देता है परंतु उनकी कार्यप्रणाली में भिन्नता पाई जाती है अतः दोनों गुंडों के द्वारा संचालित विद्यार्थियों की कार्य पद्धति विद्यालय वातावरण शैक्षिक व्यवस्था मूल्य अधिगम अनुभव द्वारा विद्यार्थियों का आत्मविश्वास सामाजिक बुद्धि , समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होंगे या नहीं यह प्रश्न उठना स्वभाविक है अतः विगत कुछ वर्षों में माध्यमिक व उच्च माध्यमिक कक्षाओं में छात्र-छात्राओं के परीक्षा परिणामों में भिन्नता देखी गई है जो यह भिन्नता विद्यार्थियों की विशेषताओं का गहनता से अध्ययन करने के लिए प्रेरित करती हैं।

उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण का यह समय जब विद्यार्थी अपने भावी व्यवसाय के चुनाव के आधार पर अपनी रुचि यू योग्यताओं क्षमताओं तथा जरूरतों के अनुसार विषय का चुनाव करते हैं इस स्तर पर कला वर्ग विज्ञान वर्ग और वाणिज्य वर्ग में से किसी एक वर्ग का चयन करते हैं इन सभी संकाय की अपनी अलग अलग प्रकृति है जहां कला व रचनात्मक प्रकृति का है वही विज्ञान वर्ग में विषय वस्तु का क्रमबद्ध रूप से अध्ययन किया जाता है तथा वाणिज्य वर्ग अपनी व्यवहारिक प्रकृति रखता है इन तीनों वर्गों की अपनी अलग अलग प्रकृति के साथ ही इस में अध्ययनरत विद्यार्थियों का स्वभाव काम करने के तरीके अभिव्यक्ति रुचि आकांक्षा स्तर आत्मविश्वास समाजिक कौशल में भिन्नता पाई जाती है विश्व की प्रकृति के संदर्भ में विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना आवश्यक प्रतीत होता है।

www.ignited.in

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उनके माता-पिता व अभिभावकों के लिए सदस्य चिंता का विषय रही है क्योंकि यह उनके जीवन की दिशा निर्धारित करती है तथा उनके भावी लक्ष्यको पाने में सहायक होती है शिक्षा का माध्यमिक स्तर विद्यार्थी जीवन का निर्णायक काल होता है इस समय विद्यार्थी अपने भावी जीवन का व्यवसाय संबंधी निर्णय लेते हैं उच्च कोटि की शैक्षिक उपलब्धि उन्हें अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर करती है अतः शर्मा हेमंत लता और देवी पूर्णिमा 2014 मिसेज नुरतजे कैली सन एचएन एंटोनियस व अन्य 2008 श्रीवास्तव एंड सिंह प्रीति 2006 उत्तम मधु 2005 चैहान पुष्पा 2003 बोहरा एचबीएल 1977 ले शैक्षिक उपलब्धि का बुद्धि लिंग पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति व्यक्तित्व आत्म प्रत्यय आकांक्षा स्तर मानसिक स्वास्थ्य रचनात्मक संज्ञा तन संज्ञानात्मक योग्यता संवेगात्मक परिपक्वता उपलब्धि अभिप्रेरणा व्यवसाय आकांक्षा अधिकार को के साथ अध्ययन किया है।

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का स्तर क्या है लिंग व संकाय के संदर्भ में क्या यह परिवर्तनशील है ?

2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों में सामाजिक संबंधों का स्तर किस प्रकार का है क्या छात्राएं छात्रों से अधिक सामाजिक होती है और विद्यालय वातावरण के संदर्भ में विद्यार्थियों में सामाजिक संबंध में अंतर पाया जाता है या नहीं?

3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि किस प्रकार की है क्या लिंग संकाय विद्यालय बोर्ड के संदर्भ में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर होता है?

4. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि और उनके आत्मविश्वास में क्या संबंध है?

5. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में समायोजन उनकी शैक्षिक उपलब्धि के साथ किस प्रकार संबंधित है क्या समायोजन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है?

6. सामाजिक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि में परस्पर किस प्रकार का संबंध पाया जाता है विद्यार्थी लिंग व संकाय के संदर्भ में यह संबंध किस प्रकार का है?

7. सामाजिक बुद्धि और समायोजन में परस्पर किस प्रकार का संबंध पाया जाता है विद्यार्थी लिंग व संकाय के संदर्भ में यह संबंध किस प्रकार का है?

समस्या कथन

"कक्षा 11 के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि और समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन"

शोध अध्ययन के उद्देश्य

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक बुद्धि , समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि केप्रभाव का अध्ययन करना ।

- कक्षा 11 वी के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- कक्षा 11 वी के कला वर्ग एवम् विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन।
- कक्षा 11 वी के कला एवम् विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के विद्यालय समायोजन में तुलनात्मक अध्ययन करना।
- कक्षा 11 वी के कला वर्ग एवम् विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- कक्षा 11 वी के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि और शैक्षिक बुद्धि में सहसंबंध का अध्ययन करना।
- कक्षा 11 वीके कला वर्ग के छात्रों की सामाजिक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध के प्रभाव का अध्ययन करना।

www.ignited.in

- कक्षा 11 वी के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि और विद्यालय समायोजन में सहसंबंध के प्रभाव का अध्ययन करना।

- कक्षा 11 वी के विद्यार्थियों के विद्यालय समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि के सहसंबंधपर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1 कक्षा 11 वी के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
2 कक्षा 11 वी के कला वर्ग एवम् विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
3 कक्षा 11 वी के कला वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
4 कक्षा 11 वी के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
5 कक्षा 11 वी के कला एवम् विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के विद्यालय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।
6 कक्षा 11 के कला वर्ग के विद्यार्थियों के विद्यालय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।
7 कक्षा 11 के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के विद्यालय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।
8 कक्षा 11 वी के कला वर्ग एवम् विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
9 कक्षा 11 वी के कला वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
10 कक्षा 11 वी के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
11 कक्षा 11 वी के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि और शैक्षिक बुद्धि में सार्थक सहसंबंध नहीं है।
12 कक्षा 11 वी के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि और विद्यालय समायोजन में सार्थक सहसंबंध नहीं है।
13 कक्षा 11 वी के कला वर्ग के छात्रों की सामाजिक बुद्धि और विद्यालय समायोजन में सार्थक सहसंबंध नहीं है।
14 कक्षा 11 वी के विद्यार्थियों की विद्यालय समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसंबंध नहीं है।
15 कक्षा 11 वी के कला वर्ग की छात्राओं के विद्यालय समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसंबंध नहीं है।

तकनीकी शब्द

शिक्षा आयोग (1964-66) ने उच्च माध्यमिक शिक्षा को दो स्तरों में विभाजित किया था। कक्षा 9 व 10 की शिक्षा को निम्न माध्यमिक स्तर तथा कक्षा 11 व 12 की शिक्षा को उच्च माध्यमिक स्तर कहा जाता है। प्रस्तुत शोध में उच्च माध्यमिक स्तर से तात्पर्य 11वीं, 12वीं कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों से है। लेकिन प्रस्तुत शोध में केवल कक्षा 11 के विद्यार्थियों को शामिल किया गया हैं।

शैक्षिक उपलब्धिः- शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य किसी विषय या पाठ में छात्र द्वारा अर्जित ज्ञान या कुशलता के विशिष्ट स्तर से है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षार्थियों द्वारा 12वीं बोर्ड परीक्षा में अर्जित प्राप्तांको से है।

समायोजनः- समायोजन से अभिप्राय जब व्यक्ति अपनी इच्छाओं, महत्वकाक्षं◌ाओं, आदर्शों आदि को जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप ढालकर अपने तथा वातावरण के मध्य एक संतोषजनक संबंध स्थापित कर लेता है तब उसे समायोजित व्यक्ति कहा जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में समायोजन से अभिप्राय विद्यार्थियों के व्यक्तिगत समायोजन, सामाजिक समायोजन, संवेगात्मक समायोजन एवं विद्यालय समायोजन से है।

सामाजिक बुद्धिः- यह एक सामान्य मानसिक क्षमता है जिससे एक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को समझता है और उनके साथ कुशलता से व्यवहार करता है सामाजिक बुद्धि वाले व्यक्तियों के सामाजिक संबंध अच्छे होते हैं जिनसे उन्हें समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

शोध अध्ययन के चरः- शोध कार्य हेतु चर शाब्दिक रूप में टंतपंइसम का अर्थ है जो कर टंतल सके अथवा परिवर्तित हो सके।

चरों का वर्गीकरण -

1. **स्वतन्त्र चरः-** साधारणतः प्रयोगकर्ता जिस कारक के प्रयास के प्रभाव का अध्ययन करना चाहता है और प्रयोग में जिस पर उसका नियन्त्रण रहता है उसे स्वतन्त्र

www.ignited.in

चर कहते है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वतन्त्र चर के रूप में सामाजिक बुद्धि औरसमायोजनसम्मिलित है।

2. **आश्रित चर:-** स्वतन्त्र चर के प्रभाव के कारण जो व्यहवहार परिवर्तन हातो है आरै जिसका अध्ययन तथा मापन किया जाता है उसे आश्रित चर कहते है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि को आश्रित चर के रूप में सम्मिलित किया गया है।

जनसंख्या:- जनसंख्या से तात्पर्य अनुसंधान क्षेत्र की सभी इकाईयों के समुदाय से है। इसकी कुछ सामान्य विशेषताएँ होती है, जिसमें से कुछ इकाईयाँ अध्ययन हेतु चुनी जाती है। इकाईयों के समुच्चय को जिसके लिए चर का मान निकाला जाता है उसे 'जनसंख्या' कहते है।

प्रत्येक शोध कार्य हतु जनसख्ंया का निधार्रण आवश्यक है इसी जनसंख्या के सवक्षरण से तथ्य व पद्रत्तों का सकंलन किया जाता है।

"प्रस्तुतशोध अध्ययन में भरतपुर शहर मंे स्थित विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत समस्त कक्षा 11 के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में शामिल किया गया है।"

न्यादर्श:- व्यवहारिक तथा सामाजिक विषयों के शाध् कार्यों मे न्यादर्श का विशेष महत्व हातो है ।इसके बिना शोध कार्य को परू नहीं किया जा सकता है न्यादर्श परवधि शोध कार्य को व्यावहारिक तथा समय , धन-शक्ति की दृष्ट से मितव्ययी बना देती है। न्यादर्श के प्रयोग से शोध परिणामों को अधिक शुद्ध एवं मितव्ययी बनाया जाता है। जब किसी जनसंख्या (इकाई, वस्तुओं या मनुष्यों का समूह) में किसी चर या विशिष्ट मान ज्ञान करने के लिए उसकी कछु इकाईयो को चुन लिया जाता है तो इस चनुने की प्रक्रिया को न्यादश (Sampling) कहते है तथा चुनी हंइु इकाईयों के समूह को न्यादर्श (Sample) कहते है।

डब्ल्यूजी. कोकस के अनुसार प्रत्येक विज्ञान की शाखा में हमारे साधन सीमित है इसलिए सम्पूर्ण तथ्य के एक अंश से अधिक अध्ययन नहीं कर पाते उसके बारे में ज्ञान प्रस्तुत किया जाता है।

श्री बोगार्डस के अनुसार - 'निदर्शन-प्रविधि एक पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार इकाईयों के एक समूह में से एक निश्चित प्रतिशत का चुनाव है।'

चयनित न्यादर्श:- प्रस्ततु शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में भरतपुरशहर को सोदेश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि से चयन किया गया तथा भरतपुरशहर में स्थित राजस्थान बोर्ड के सरकारी विद्यालय एवं गैर सरकारी विद्यालयों में प्रत्येक विद्यालय से 30 विद्यार्थी (15 छात्र, 15 छात्राएँ) एवं कुल 500 विद्यार्थियों का यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा चयन किया गया। शोधकत्री द्वारा भरतपुरशहर को सोदेश्यपूर्ण न्यादशर्न द्वारा न्यादर्श के रूप में इसलिए चयन किया गया क्योंकि भरतपुरशहर शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणीय है यहाँ विभिन्न वग्रों संकायों के छात्र-छात्राएँ उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने साथ-साथ विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने आते है। ऐसी स्थिति मे उनके सामाजिक बुद्धिसमायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया जाना उचित प्रतीत हुआ है। अतः इस स्तर पर उनके सामाजिक बुद्धिशैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का अध्ययन करना उचित प्रतीत हुआ।

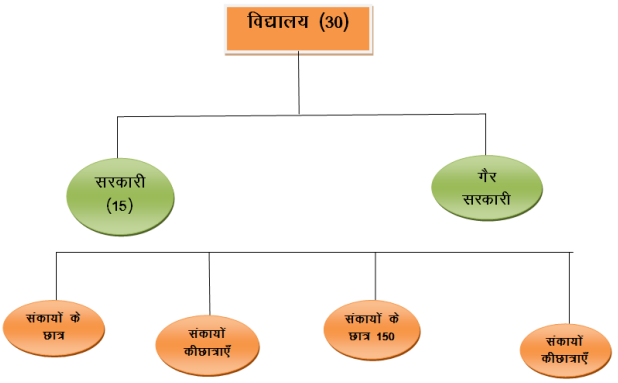

प्रयुक्त सांख्यिकी सांख्यिकी अनुसंधान का मूल आधार है। प्रस्तुत शोध हेतु जिन सांख्यिकी विधि की सहायता ली गई उनकी जानकारी यहाँ दी जा रही है।

1. मध्यमान (Mean)
2. मानक विचलन (S.D.)

शोध की परीसीमाएं

1. प्रस्तुत शोध केवल भरतपुर जिले तक ही सीमित रहेगा।

2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में एन. के. चड्ढा तथा उषा गणेशन द्वारा निर्मित सामाजिक बुद्धि परीक्षण तथा ए. के. पी. सिन्हा तथा प्रोफेसर आर. पी. सिंह द्वारा निर्मित विद्यालय अभियोजन अनुसूचीयों का प्रयोग किया जाएगा।

www.ignited.in

3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि और विद्यालय समायोजन पर शिक्षक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

4. प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर की 11वीं के कला व विज्ञान वर्ग के छात्र-छात्राओं को ही सम्मिलित किया जाएगा।

5. यह अध्ययन शोध की सर्वेक्षण विधि द्वारा किया जाएगा।

निष्कर्ष

मुख्य परिकल्पना रू.कक्षा 11 वी के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

गौण परिकल्पना- कक्षा 11वी के छात्र व छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

समूह	विधार्थी समूह	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मान	परिकल्पना सत्यापन स्तर
कक्षा 11 छात्र	375	110.95	12.63	0.978	स्वीकृत 0-05 स्तर
कक्षा 11 छात्राए	375	108.77	12.49		

0.05 स्तर पर टी-मान = 1.963 स्वतंत्रता अंश=748

व्याख्या और विश्लेषण

उपरोक्त तालिका के अनुसार कक्षा 11 के छात्र-छात्राओं की सामाजिक बुद्धि स्तर से प्राप्त मध्यमान तथा मानक विचलन जाचा गया । कक्षा 11 के छात्रों के समूह का प्राप्त मध्यमान 110.95 देखा गया व छात्राओ के समूह का प्राप्त मध्यमान 108.77 देखा गया है तथा छात्रों के समूह का प्राप्त मानक विचलन 12.63 देखा गया व छात्राओ के समूह का प्राप्त मध्यमान 108.77 देखा गया है। छात्र - छात्राओं के मध्यमान और मानक विचलन में अंतर देखा गया जिसके अंतर्गत छात्रों के समूह का प्राप्त मध्यमान और मानक विचलन छात्राओ की तुलना अधिक पाया गया और स्वतंत्र अंश 0.05 सार्थक स्तर से निम्न पाया गया जिससे निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत की गई है।

कक्षा 11वी के छात्र व छात्राओं की सामाजिक बुद्धि से सम्बंधित आरेख

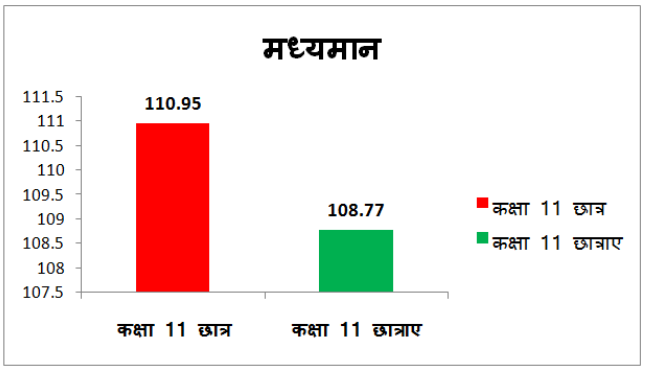

परिकल्पना कक्षा 11 वी के कला वर्ग एवम् विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

समूह	विधार्थी समूह	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मान	परिकल्पना सत्यापन स्तर
कला वर्ग विद्यार्थी	375	105.95	11.63	0.971	स्वीकृत 0.05 स्तर
विज्ञान वर्ग विद्यार्थी	375	106.77	11.49		

0.05 स्तर पर टी-मान = 1.963 स्वतंत्रता अंश =748

व्याख्या और विश्लेषण:-उपरोक्त तालिका के अनुसार कक्षा 11 वी के कला वर्ग के विद्यार्थियों के समूह का प्राप्त मध्यमान 105.95 देखा गया व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का प्राप्त मध्यमान 106.77 देखा गया है तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों का प्राप्त मानक विचलन 11.63 देखा गया व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का प्राप्त मानक विचलन 11.49 देखा गया है। कला वर्ग एवम् विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मध्यमान और मानक विचलन में अंतर देखा गया जिसके अंतर्गत कला वर्ग के विद्यार्थियों का प्राप्त मध्यमान विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना मे अधिक पाया गया तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का प्राप्त मानक विचलन कला वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना मे अधिक पाया गया जिसमे स्वतंत्र अंश 0.05 सार्थक स्तर से निम्न पाया गया जिससे निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत की गई है।

कला वर्ग एवम् विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि से सम्बंधित आरेख

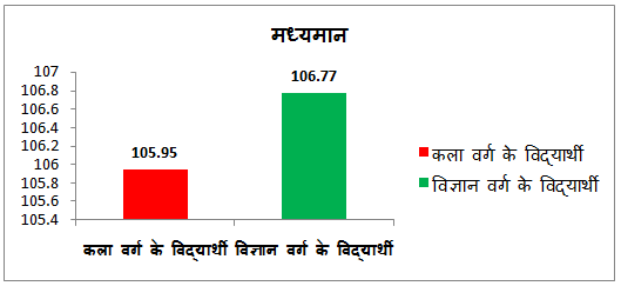

www.ignited.in

मुख्य परिकल्पना . कक्षा 11 वी के कला वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

गौण परिकल्पना. कक्षा 11 वी के कला वर्ग के छात्र व छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

समूह	विद्यार्थी समूह	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मान	परिकल्पना सत्यापन स्तर
कला वर्ग छात्र	188	105.09	10.67	1.433	स्वीकृत 0.05 स्तर
कला वर्ग छात्राए	187	106.81	12.50		

0.05 स्तरपरटी-मान =1.967 स्वतंत्रता अंश =373

व्याख्या और विश्लेषण:- उपरोक्त तालिका के अनुसार कक्षा 11 के कला वर्ग के छात्र व छात्राओं की सामाजिक बुद्धि स्तर से प्राप्त मध्यमान तथा मानक विचलन को जांचा गया। कक्षा 11 के कला वर्ग के छात्रों के समूह का प्राप्त मध्यमान 105.09 देखा गया व कला वर्ग की छात्राओं का प्राप्त मध्यमान 106.81 देखा गया है तथा कला वर्ग के छात्रों का प्राप्त मानक विचलन 10.67 देखा गया एव कला वर्ग की छात्राओं का प्राप्त मानक विचलन 12.50 देखा गया है। कला वर्ग के छात्र व छात्राओं के मध्यमान और मानक विचलन में अंतर देखा गया जिसके अंतर्गत कला वर्ग के छात्राओं के समूह का प्राप्त मध्यमान कला वर्ग के छात्रों की तुलना मे अधिक पाया गया तथा कला वर्ग की छात्राओ का प्राप्त मानक विचलन कला वर्ग के छात्रों की तुलना मे अधिक पाया गया जिसमे स्वतंत्र अंश 0.05 सार्थक स्तर से निम्न पाया गया जिससे निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत की गई है।

कला वर्ग के छात्र व छात्राओं की सामाजिक बुद्धि से सम्बंधित आरेख

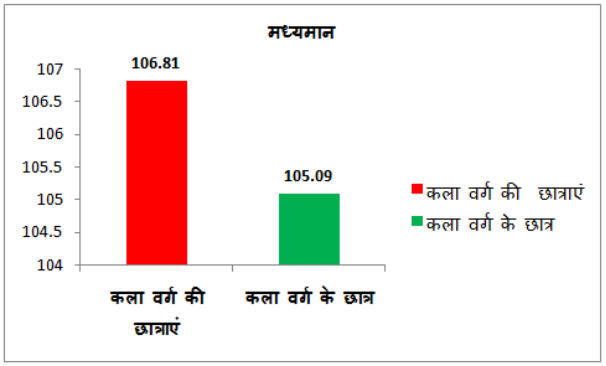

परिकल्पना: कक्षा 11 वी के विज्ञान वर्ग की छात्राओं के विद्यालय समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसंबंध नहीं है।

समूह	चल	विद्यार्थी समूह (N)	समसंबंध गुणांक	सहसंबंध	परिकल्पना सत्यापन स्तर
विज्ञान वर्ग की छात्राए	विद्यालय समायोजन	188	0.38	ऋणात्मक	स्वीकृत 0.05 स्तरपर
विज्ञान वर्ग की छात्राए	शैक्षिक उपलब्धि	187	0.30	ऋणात्मक	

0.05 स्तरपरटी-मान = 0.0993
स्वतंत्रताअंश (N-2) =186
0.05 स्तरपरटी-मान = 0.0994
स्वतंत्रताअंश (N-2) =185

व्याख्या और विश्लेषण: उपरोक्त तालिका के अनुसार कक्षा 11वी के विज्ञान वर्ग की छात्राओ के विद्यालय समायोजन में सार्थक सहसंबंध गुड़णाक का मान 0.38 देखा गया और विज्ञान वर्ग की छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसंबंध गुड़णाक का मान 0.30 देखा गया जो की विद्यालय समायोजन में 186 स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता के आवश्यक मान 0.0993 से कम देखा गया है और शैक्षिक उपलब्धि में 185 स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता के आवश्यक मान 0.0994 से कम देखा गया है अतः स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के विद्यालय समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि में ऋणात्मकसहसंबंध पाया जाता है जिससे निर्धारित परिकल्पना ऋणात्मकस्तर पर स्वीकृत मानी गई है।

संदर्भ स्रोत

अग्रवाल, वाई.पी. (2000): सांख्यिकी विधियाँ, स्टेर्लिंग पब्किेशन प्रा.लि., नई दिल्ली।

बेस्ट, जाॅन डब्लयू (1963): रिसर्च इन एज्यूकेशन , पेन्टीस हाल आफ इण्डिया प्रा लि, नई दिल्ली।

दूबे, भावेश चन्द्र (2011): "विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन पर प्रभाव, आधुनिक भारतीय शिक्षा, वर्ष 31, अंक 3 जनवरी 2011

गैरेट, हेनरी ई. (2014): 'शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग" कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

कपिल,एच.के. (2004): "अनुसंधान विधियाँ ", हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा।

पारीक, अलका व गोस्वामी: "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का कुसुम (2017) शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन। जर्नल आॅफ माॅडर्न मेनेजमेंट एण्ड एन्टरप्रिन्योरशिप , वोल्यूम 7(1), जनवरी 2017,

राय, पारसनाथ (2012): "अनुसंधान परिचय " लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

रावत, भारती व राज ,: "बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर समायोजन के अनुज (2017) प्रभाव का अध्ययन" इन्टरनेशनल एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च जर्नल वोल्यूम 3 (3), मार्च 2017,

सिंह, अरूण कुमार (2013): 'मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ "मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन , नई दिल्ली।

सिंह, प्रेमपाल (2017): माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन एव शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन। जर्नल आॅफ सोशियांे एज्यूकेशन एण्ड कल्चरल रिसर्च, वोल्यूम 3(7), जुलाई दिसम्बर 2017

ढयाल. एस. एन. ,फाटक ए.बी (2000)-शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र जयपुर राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भटनागर ए.बी. भटनागर मिनाक्षी , अनुराग, (2003) एजुकेशनल साइकोलोजी, आरलाल बुक डिपो जनवरी

वर्मा, जी.एस. (2005) शिक्षक तकनीकी लायल बुक डिपो , मेरठ

डा डी.एन श्रीवास्तव ,डा प्रीति वर्मा (2006) मनोविज्ञान और शिक्षा में सा ंख्यिकी विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

गुप्ता एसंपी गुप्ता अल्का(2007) सांख्यिकीय विधियाँ इलाहबाद शाखा पुस्तक भवन।

शशीकला सरीन एव सरीन (2008) शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ विनोद पुस्तक मन्दीर

डाॅ. डी एन श्रीवास्तव (2008-2009) सांख्यिकी एव मापन अग्रवाल पब्लिकेशन

श्रीवास्तव डी.एन (2009) अन ुसंधान विधियाॅँ आगरा साहित्य प्रकाशन

सतीशकुमार (2009) अध्यापक शिक्षा की समस्याएँ एवं चुनौतियाँ भारतीय आधुनिक शिक्षा

बी.एस.राजसपा (2010) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व

प्रसाद लोकेश के (2010) अनुसंधान पद्वतिशास्त्र नई दिल्ली कोवरी बुक्स

लोकेश कौल (2010) शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली

Corresponding Author

ममता शर्मा*

शोधार्थी, लाडर्स विश्वविद्यालय, अलवर (राज.)

www.ignited.in